सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु,

सिद्धार्थनगर–272202 उ0प्र0 (भारत)

Email Id: registrar@suksn.edu.in, Website : www.suksn.edu.in

पत्रांक–146 / कु0स0का0 / सि0वि0वि0 / 2026, दिनांक–04–05–2026

सेवामें,

प्राचार्य / प्राचार्या,
समस्त सम्बद्ध महाविद्यालय,
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर।

विषय– रानी दुर्गावती के जीवन पर आधारित दुर्गावती गढ़ा की पराक्रम रानी, पुस्तक की 10–10 प्रतियॉ क्रय किये जाने के सम्बन्ध में।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक शिक्षा निदेशक (उ0शि0), शिक्षा डिग्री विकास अनुभाग, उ0प्र0, प्रयागराज के पत्र संख्या–डिग्री विकास / 276 / 2026–27 दिनांक 30–04–2026 का संदर्भ ग्रहण करने का कष्ट करें, जिसके द्वारा उच्च शिक्षा मंत्री के पत्र संख्या–303 / सामान्य / 2026मं0उ0शि0 / 2026 दिनांक 11–03–2026 के क्रम में वीरांगना रानी दर्गावती के 501 वां जन्म वर्ष के अवसर पर **"दुर्गावती गढ़ा की पराक्रमी रानी"** पुस्तक महाविद्यालयों में 10–10 प्रतियॉ खरीद करने हेतु निर्देशित किया गया है। (पत्र संलग्न)

अतः उक्त के सम्बन्ध में (संलग्न पत्र के अनुसार) आवश्यक कार्यवाही करते हुए कृत कार्यवाही की सूचना अधोहस्ताक्षरी को उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें, जिससे शासन को सूचना ससमय उपलब्ध कराया जा सकें।

संलग्नक– यथोपरि।

04/05/26

कुलसचिव
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु
सिद्धार्थनगर।

पत्रांक– / तद्दिनांकित।

प्रतिलिपि–निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी, गोरखपुर।
2. निजी सचिव, कुलपति को मा0 कुलपति जी के अवलोकनार्थ।
3. सम्बन्धित पत्रावली हेतु।

कुलसचिव
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु
सिद्धार्थनगर।

ई – मेल

प्रेषक,

शिक्षा निदेशक (उ0 शि0),
शिक्षा डिग्री विकास अनुभाग,
उ0 प्र0, प्रयागराज।

सेवा में,

1. समस्त क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी, उत्तर प्रदेश।
2. समस्त कुलसचिव, राज्य विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश।

पत्रांकः- डिग्री विकास/ 276 /2026-27 दिनांकः 30/04/2026

विषयः- रानी दुर्गावती के जीवन पर आधारित दुर्गावती गढ़ा की पराक्रम रानी, पुस्तक की 10-10 प्रतियाँ क्रय किये जाने के संबंध में।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक उच्च शिक्षा मंत्री के पत्र संख्या 303/सामान्य/2026मं0उ0शि0/2026 दिनांक 11.03.2026 का संदर्भ ग्रहण करने का कष्ट करें जो माननीय राज्यपाल उ0प्र0 तथा प्रमुख सचिव उत्तर प्रदेश शासन एवं निदेशक उच्च शिक्षा प्रयागराज के निर्देश की तरह वीरांगना रानी दुर्गावती के 501 वां जन्म वर्ष के अवसर पर "दुर्गावती गढ़ा की पराक्रमी रानी" पुस्तक हेतु निदेशक उच्च शिक्षा एवं क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी को महाविद्यालय में 10-10 प्रतियाँ खरीद करने हेतु निर्देशित करने के संदर्भ में हैं।

उपरोक्त के क्रम में संलग्न पत्र के साथ संलग्न संलग्नक का अवलोकन करते हुए की गयी अपेक्षा के क्रम में नियमानुसार आवश्यक कार्यवाही करना सुनिश्चित करें।

संलग्नक – यथोक्त।

भवदीय,

30/4/26

डॉ0 (शशि कपूर),
संयुक्त निदेशक (उ0शि0),
कृते – शिक्षा निदेशक (उ0शि0),
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज।

पृष्ठांकन संख्या – डिग्री विकास/ 276-77 / उसी तिथि को।

प्रतिलिपि विशेष सचिव, उच्च शिक्षा अनुभाग – 3, उत्तर प्रदेश शासन लखनऊ को सूचनार्थ प्रेषित –

डॉ0 (शशि कपूर),
संयुक्त निदेशक (उ0शि0),
कृते – शिक्षा निदेशक (उ0शि0),
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज।

रजि.न. : UPA28733902/01-01-2021
GSTIN-09AWRPA2908A1ZU

शतरंग प्रकाशन

रजि. कार्यालयः-एस-43, विकास दीप, स्टेशन रोड, लखनऊ-226001
पत्राचार पताः-ए-305,ओसीआर बिल्डिंग,विधानसभा मार्ग, लखनऊ-226001
Mo:9415508695, 8787093085 E-mail : Ltp284403@gmail.com, timesshatrang@gmail.com

पत्रांक सं0: 749 दिनाँकः 10/03/2026

कार्यालय,
पत्र सं0 303 /सामान्य/2026
मं0उ0शि0/2026
दिनांक 11 / 03 /2026

निदेशक, उ0शिक्षा
कृ0 आवश्यक कार्यवाही करें।
11/03/26 (01)
(योगेन्द्र उपाध्याय)
मंत्री,
उच्च शिक्षा विभाग,
उत्तर प्रदेश।

सेवा में,

माननीय उच्च शिक्षा मंत्री

उत्तर प्रदेश सरकार,लखनऊ

विषय- माननीय राज्यपाल उ.प्र. तथा प्रमुख सचिव उत्तर प्रदेश शासन एवं निदेशक उच्च शिक्षा प्रयागराज के निर्देश की तरह वीरांगना रानी दुर्गावती के 501 वां जन्म वर्ष के अवसर पर "दुर्गावती गढ़ा की पराक्रमी रानी"पुस्तक हेतु निदेशक उच्च शिक्षा एवं क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी को महाविद्यालय में 10-10 प्रतियाँ खरीद करने हेतु निर्देशित करने के संदर्भ में।

महोदय,

निवेदन करना है कि वीरभूमि बुंदेलखंड उ.प्र. की बेटी गढ़ा कटंगा के साम्राज्य की आदिवासी वीरांगना दुर्गावती की वीरगाथा को इतिहास लेखक राजगोपाल सिंह वर्मा ने "रानी दुर्गावती"नामक पुस्तक में इतिहास सम्मत रूप से लिखा है। पुस्तक की हार्ड बाईन्ड एक प्रति का मूल्य 650 रूपये है।आदिवासी वीरांगना रानीदुर्गावती जीवन गाथा जन-जन के लिए प्रेरणादायक है। विषय- माननीय राज्यपाल उ.प्र. तथा प्रमुख सचिव उत्तर प्रदेश शासन एवं निदेशक उच्च शिक्षा प्रयागराज के निर्देश की तरी वीरांगना रानी दुर्गावती के 501 वां जन्म वर्ष के अवसर पर "दुर्गावती गढ़ा की पराक्रमी रानी"पुस्तक निदेशक उच्च शिक्षा एवं क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी को महाविद्यालय में 10-10 प्रतियाँ खरीद करने हेतु निर्देशित का कष्ट करें। उपरोक्त पुस्तक क्रय पर 15प्रतिशत की छूट प्रदान की जायेगी।

सलग्न -माननीय राज्यपाल राजभवन उ.प्र., प्रमुख सचिव उत्तर प्रदेश शासन लखनऊ तथा निदेशक उच्च शिक्षा प्रयागराज द्वारा निर्गत निर्देश पत्र की छाया प्रति

(विदर्भ अग्निहोत्री)

प्रबंधक

शतरंग प्रकाशन,

विकास
29/4/26
सं.वि
27/4/26
27/4/26
27/4/2026

शतरंज टाइम्स

शतरंग टाइम्स

(मासिक)

वर्ष:12, अंक: 7, 15 जनवरी, 2026

प्रधान संपादक : राजेन्द्र अग्निहोत्री
कॉपी एडिटर : शिवम अग्निहोत्री
विशेष संवाददाता : रघुनाथ द्विवेदी (रायबरेली)
ब्यूरो : सतीश श्रीवास्तव (रायपुर)
प्रमोद कुमार मल्लिक (उड़ीसा)
डा. संदीप प्रभूगावकर (गोवा)
सुनील मिश्रा (दिल्ली)
शिव कुमार शर्मा (नोएडा)
सरोज त्रिपाठी (बांदा)
अनिल कंचन (बुन्देलखण्ड)
सतीश पुरोहित (भोपाल)
प्रताप सिंह नागर (मेरठ)
महावीर सिंह (कुशीनगर)
नफीस खान (अयोध्या ग्रामीण)
पंकज अग्निहोत्री (फतेहपुर)

विज्ञापन प्रतिनिधि : एच. पी. सिंह (अवैतनिक)
विधि सलाहाकार : काशीनाथ (एडवोकेट)
रजिस्टर्ड कार्यालय : एस-43, द्वितीय तल, विकास दीप, स्टेशन रोड, लखनऊ, उ.प्र.
ई-मेल:timesshatrang@gmail.com
मो.-09415508695,09795721760
पत्राचार कार्यालय : A-305 ओ.सी.आर. बिल्डिंग, विधान सभा मार्ग, लखनऊ 226001
कार्टून : नेट के सौजन्य से

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक राजेन्द्र अग्निहोत्री द्वारा अजंता ऑफसेट, गुईन रोड, अमीनाबाद, लखनऊ एवं सीता प्रेस लखनऊ से मुद्रित कराकर S-43, द्वितीय तल, विकास दीप स्टेशन रोड, लखनऊ उत्तर प्रदेश से प्रकाशित।

शतरंग टाइम्स में प्रकाशित सभी लेख एवं सामग्री लेखकों के स्वयं के हैं, इससे प्रकाशक व सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।
किसी भी विवाद की स्थिति में हमारा न्याय क्षेत्र-लखनऊ
(सम्पादन एवं संचालन पूर्णतया अवैतनिक है)

http://issuu.com/timesshatrang

हिंदी एक भाषा जो हम सभी को जोड़ती है

हिंदी भाषा ने विश्व पटल पर अपनी पहचान बनाई है। विश्व स्तर पर हिंदी ने एक सशक्त संपर्क भाषा के रूप में अपना मुकाम हासिल किया है। हिंदी दुनिया की तीसरी और भारत की सबसे ज्यादा बोले जाने वाली भाषा है। हिंदी एक विशाल जन समूह द्वारा बोली जाने वाली वह भाषा जो सिर्फ भारत देश में ही नहीं देश के कई देशों जैसे नेपाल, भुटान, फिजी, बांग्लादेश, मॉरीशस, सिंगापुर, त्रिनिदाद और टोबैगो सहित कई अन्य देशों में भी प्रमुखता से बोली जाती है। हिंदी भारत की राज्य की भाषाओं में से एक है। हिंदी की जड़े जितनी गहरी हैं, उतना ही समृद्ध इसका इतिहास भी है। हिंदी भाषा को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा का दर्जा दिलाने के लिए कई बड़े कदम उठाए जा रहे हैं। अब संयुक्त राष्ट्र की सूचनाएं हिंदी में भी जारी होने लगी हैं। मैं कामना करती हूँ कि हिंदी भाषा राष्ट्रीय एकता और सद्भावना की डोर को निरंतर मजबूत करती रहे । नित नए उदाहरण देखने को मिलते हैं कि विदेशी लोग भारतीय संस्कृति और भाषा को सीखने में रूचि ले रहे हैं। आज के दौर में रेडियो, टीवी, विज्ञापन, सिनेमा, प्रमुख पत्र - -पत्रिकाएं और समाचार पत्रों में हिंदी माध्यम रोजगार का सशक्त माध्यम बनता जा रहा है।

हिंदी को समृद्ध करने के लिए अंग्रेजी के अंधाधुंध प्रयोग की हिमायत करने से पहले हमें यह भी सोचना चाहिए कि भाषा की समृद्धि के नाम पर हम अपनी परंपरा और संस्कृति को कमजोर नहीं कर सकते। स्वयं अंग्रेजी भाषा ने दुनिया की अनेक भाषाओं की शब्द संपदा को स्वीकार किया है किंतु अपनी संस्कृति और परंपरा की कीमत पर नहीं, न ही उन्होंने इसके लिए अपने प्रचलित शब्दों का त्याग किया है। हम भारतवासी अपने चाचा को अंकल कहने लगे किंतु अंग्रेजों ने ताऊ, ताई, बुआ, फूफा, मामा, मामी जैसे रिश्तों के लिए हिंदी के शब्दों को स्वीकार नहीं किया। जिस प्रकार हम हिंदी बोलते समय 'बट', 'एंड', 'यू नो', 'ऑलरेडी' का इस्तेमाल करते हैं उसी प्रकार अंग्रेजी बोलते हुए बीच बीच में हिंदी के शब्दों का इस्तेमाल नहीं करते, आखिर क्यों? हम अंग्रेजी की शुद्धता की इतनी चिंता क्यों करते हैं और अपनी भाषा की शुद्धता के साथ घातक समझौता करने में हमें कोई संकोच क्यों नहीं होता? भाषा और साहित्य के बीच गहरा संबंध होता है। भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं है। बल्कि यह विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम होती है। भाषा एक समूह और समाज को जोड़ने की भूमिका निभाती है। भारत एक भाषा बहुल देश है और भाषा की विविधता इसे सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को अनूठा बनाती है। यह संस्कारों और परंपराओं का बीज है।

हिंदी को सही मायने में बढ़ावा तभी मिल सकेगा जब हम हिंदी में सरल, सुगम एवं मौलिक रूप में कार्य करें ।

राजेन्द्र अग्निहोत्री
(प्रधान संपादक)
timesshatrang@gmail.com